लक्ष्य

रोज की अपेक्षा, आज वह सुबह जल्दी जाग गई। नहा-धोकर पूजा करने बैठ गई। सभी आश्चर्यचकित थे। माँ ने मन में सोचा, सुचेता खुश है। आज उसे लड़केवाले देखने आ रहे थे। सभी अपने-अपने कामों में व्यस्त हो गए।

थोडी देर बाद सुचेता बोली, ''माँ मैं कॉलेज जा रही हूँ''। माँ ने उससे गुस्से की नजर से देखा और बोली, क्या आज कोई खास बात है - पर जो भी हो आज तुम कॉलेज नहीं जाओगी, घर पर मेहमान आ रहे हैं। सुचेता ने चिढ़कर जवाब दिया, ''आज परीक्षा का नतीजा निकल रहा है - इसलिए जरुर जाऊंगी।'' माँ बड़बड़ाती हुई रसोई में चली गई और सुचेता का मुहँ उतर गया।

आज से पहले तो माँ ने कभी ऐसा नहीं किया था। सुचेता बचपन से ही प्रखर बुद्धि थी। इस महत्त्वाकांक्षी किशोरी ने आई.पी.एस. परीक्षा पास करने का दृढ़ निश्चय किया था। वह पूरी लगन से परीक्षा की तैयारी कर रही थी। पर अभी एक वर्ष का समय था।

सुचेता उच्च कुल में जन्मी थी, जिसके सभी सदस्य विद्वान और पढ़े लिखे थे परन्तु कन्याओं के अधिक पढ़ने से उन्हें परहेज था। सुचेता अक्सर अपनी माँ को अपने सुनहरे भविष्य के सपने सुनाती थी। किन्तु माँ ने कभी उसे अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया। सुचेता के माता-पिता दोनों ही उसे जिम्मेदारी समझकर, उसका विवाह शीघ्र करना चाहते थे-आखिर उन्हें उसके दो छोटे भाइयों का भविष्य जो सँवरना था। माता-पिता की इच्छानुसार, सुचेता का विवाह हुआ। अन्य भारतीय स्त्रियों के समान उसने अपने पति को परमेश्वर मानकर पूजा और घर वालों की सेवा-सुश्रुषा में लग गई।

विवाह के कुछ ही महीने पश्चात उसके ससुर की अकस्मात् मृत्यू हो गई। सास ने इस विपत्ति का दोषी सुचेता को ही ठहराया। पति का व्यवहार भी बदल सा गया था। सुचेता दुखी थी। पति का कारोबार ठीक नहीं चल रहा था। सास ने भी खटिया पकड़ ली थी। सुचेता पर गृहस्थी के बोझ के साथ मातृत्व का बोझ भी था।

सास और पति से रोज प्रताड़ित होने पर भी वह सब कुछ सहती रही। परन्तु सास ने अपनी लालसाओं की पूर्ति न होने पर अपने बेटे का दूसरा विवाह करने की ठानी और सुचेता को गृह-कलह में दक्ष और विनाशकारी घोषित कर घर से निकाल दिया।

सुचेता टूट चूकी थी। वह किस-किस से लड़ती-समाज से,बेटी होने के अपेक्षित अभिशाप से, पति और ससुराल पक्ष की घृणित लालसाओं से ? एक नन्ही सी किशोरी अपने अंतरंग मे एक गौरवशाली भविष्य बनाने का लक्ष्य लेकर चली थी - पर आज वह बिखर गई थी।

ये सुचेता हममें से कोई भी हो सकती है। विज्ञान की प्रगती या मनुष्य के ज्ञानार्जन से हमने किसका भला किया है ? समाज और सामाजिक परम्पराओं और रुढ़ियों ने हमें गुलाम बना लिया है।

सोचिए- महिलाओं का महिलाओं द्वारा शोषण कहाँ और कब तक उचित है ?

अपर्णा शर्मा